परमेश्वर का वचन बाँटना:

हर मसीही सेवकाई में अगुवाई करने वाला परमेश्वर का वचन बाँटता है। आप इसे हजारों या सैकड़ों लोगों के सामने एक शिक्षक के रूप में कर सकते हैं। आप इसे एक छोटे समूह में, घर पर बाइबल अध्ययन के दौरान कर सकते हैं। आप इसे अपनी दलके साथ भी कर सकते हैं।

लेकिन यदि आप मसीही सेवकाई में एक अगुवा हैं, तो ऐसे कई अवसर आएँगे जब आप परमेश्वर के वचन को लेंगे और उसे दूसरों में बाँटेंगे, और जब आप उन्हें सिखाएँगे तो परमेश्वर अपने वचन का उपयोग उन्हें उठाने के लिए, उन्हें योग्य बनाने के लिए, उन्हें ललकारने के लिए, और उन्हें रूपांतरित करने के लिए करेगा। और हमें यह समझना होगा कि एक अगुवा के रूप में परमेश्वर के वचन का स्थान कितना महत्वपूर्ण है। बाइबल 2 तीमुथियुस 3:16 में अपने बारे में कहता है। यह जो कहता है, वह इस प्रकार से है:-

परमेश्वर यह स्पष्ट करता है कि उसका वचन ही वह है जो सेवकों को पूरी तरह से योग्य बनाएगा। आपके रूप में अगुवा का काम है उनका ध्यान परमेश्वर के वचन की ओर आकर्षित करना, और उन्हें उसका वचन बाँटना। इस सत्र में हम जो करना चाहते हैं, वह यह है कि हम यह समझें कि आप इसे प्रभावी रूप से कैसे करेंगे? चाहे वह किसी भी संदर्भ में हो, जैसे रविवार सुबह का सन्देश, एक छोटा समूह अध्ययन, या नेतृत्व दलके साथ एक सत्र, आप लोगों तक परमेश्वर

का वचन प्रभावी रूप से कैसे पहुँचाएंगे? और मैं आपके साथ कुछ पहलुओं को साझा करना चाहता हूँ, जिन्हें आपको लोगों को सिखाने के लिए तैयारी करते समय पर काम करना होगा। यह इस प्रकार शुरू होता है। सबसे पहले, आप अपने उद्देश्य से शुरुआत करते हैं।

आप परमेश्वर का वचन उन्हें क्यों बाँट रहे हैं? आप क्या विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अपने वचन के माध्यम से उनमें क्या पूरा करेगा? आपको इसे परमेश्वर से एक प्रकाशित ज्ञान और प्रार्थना के माध्यम से समझना होगा। यह जानने का कारण है कि आप यह वचन उन्हें क्यों दे रहे हैं, यह है कि आप जो परिवर्तन देखना चाहते हैं, वह क्या है। आप चाहते हैं कि परमेश्वर क्या करे। अब जब हम वचन बाँटते हैं, तो सामान्यतः चार चीज़ें होती हैं जो परमेश्वर करता है। वचन प्रेरित कर सकता है, जहाँ लोग प्रेरित होते हैं, वे विश्वास और आशा से भर जाते हैं। वचन चुनौती दे सकता है, जहाँ लोग महसूस करते हैं, मुझे बदलाव की आवश्यकता है। वचन प्रकट कर सकता है। आप सच में परमेश्वर के बारे में कुछ नया जान पाते हैं, जो पहले नहीं जानते थे। और वचन बहुत व्यावहारिक हो सकता है, जो आपको यह निर्देश देता है कि निर्णय कैसे लेना है या क्या करना है। यह प्रेरित कर सकता है, यह चुनौती दे सकता है, यह प्रकट कर सकता है, और यह व्यावहारिक हो सकता है। जब आप परमेश्वर का वचन बाँटते हैं, तो ये चारों बातें मौजूद होती हैं। लेकिन आपको यह तय करना होगा कि इनमें से कौन सी सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात

है। इस पल में, जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात है, वह यह है कि मैं उन्हें एक सत्य प्रकट करना चाहता हूँ जो उनके पास नहीं है। नहीं, इस पल में, जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात है, वह यह है कि मैं उन्हें वह व्यावहारिक दिशा देना चाहता हूँ जो उन्हें करना चाहिए।

ये चारों बातें वहाँ होंगी। लेकिन परमेश्वर का वचन बाँटने का पहला कदम, इससे पहले कि आप सिखाने की तैयारी शुरू करें, यह जानना चाहिए है कि परमेश्वर ने अपना वचन आपके हृदय में क्यों रखा है और आप चाहते हैं कि परमेश्वर इसके साथ क्या करे, क्योंकि यही वह अंतिम उद्देश्य बन जाता है। इसलिए आप उस उद्देश्य को स्थापित करते हैं, चार लक्ष्यों को जानते हुए, लेकिन यह जानकर कि इनमें से कौन सा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

फिर, जब आप अपनी शिक्षा देने की तैयारी कर रहे होते हैं, और आप जानते हैं कि आप क्यों शिक्षा दे रहे हैं, तो यह बहुत सहायक होता है कि आप एक ढांचा अपनाएँ, जो इस शिक्षा की संरचना हो जिसे आप देने वाले हैं। और अक्सर, वह संरचना इतनी सरल हो सकती है कि उसे आसानी से याद किया जा सकता है, जैसे यदि आप बीज बोनेवाले की दृष्टांत की कहानी का उपयोग करने जा रहे हैं। और वहाँ चार प्रकार की मिटटी हैं। प्रत्येक प्रकार की मिटटी उस ढांचे का हिस्सा है।

आपको इसके बारे में विस्तार से समझाने और रेखांकित करने के लिए नोट्स की आवश्यकता नहीं है। आप ढांचे को जानते हैं। आपको अन्य

चीजों के लिए नोट्स की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन आप ढांचा तैयार कर लिए है। यदि आप अच्छे सामरी की दृष्टांत पर शिक्षण दे रहे हैं, तो आप प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं, जो आपके ढांचे के रूप में काम करेंगी। जैसे, मनुष्य ने किसे देखा? समस्या क्या थी? उसने कैसे मदद किया? ये प्रश्न उस शिक्षण के लिए ढांचा तैयार करते हैं जिसे आप देने वाले हैं। ढांचे का इतना महत्वपूर्ण होना इसका कारण यह है कि सिर्फ चार बिंदुओं के बजाय यह एक प्रवाह (धारा) उत्पन्न करता है, । इसमें एक प्रारंभ और एक अंत होता है, और आप उस बड़े प्रवाह (धारा) से शुरू करते हैं, जिसे आप समझते हैं।

मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझे यह वचन सिखाने के लिए क्यों कह रहा है, और मैं उस ढांचे को भी जानता हूँ जिसका उपयोग मैं उस वचन को देने में करने जा रहा हूँ। अक्सर, वह ढांचा स्वयं पवित्रशास्त्र से निकलकर आता है, और जब आप परमेश्वर का वचन बाँट रहे होते हैं, तो वह आपकी सहायता करता है। एक बार जब आपने उद्देश्य को पहचान लिया, और अपने पवित्रशास्त्र के आधार पर ढांचे को स्थापित करना शुरू कर दिया है, तब आप उस स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ आप वास्तव में उस विशेष सामग्री में गहराई के द्वारा प्रवेश करते हैं।

मैं वास्तव में उन्हें क्या सिखाना चाहता हूँ? वह सामग्री क्या है जो मैं उन्हें सिखाना चाहता हूँ? और जब आप सामग्री के बारे में सोचते हैं, तो याद रखें कि इसमें कुछ भी नया नहीं है, लेकिन एक ताज़ा दृष्टिकोण, एक ताज़ा प्रकाशन बहुत महत्वपूर्ण होता है। जब आप

सामग्री के बारे में सोचें, तो इस बात को ज़रूर याद रखें कि अनुप्रयोग इस सत्य के साथ वे क्या करें यह स्वयं उस सत्य जितना ही महत्वपूर्ण है। मैं आपको इसका एक उदाहरण देता हूँ।
मान लीजिए आप परमेश्वर का वचन बाँटने जा रहे हैं, आप किसी दल के साथ काम कर रहे हैं, और आप उनका विश्वास बढ़ाना चाहते हैं, या आप अपनी कलीसिया के लोगों का विश्वास मजबूत करना चाहते हैं, तो आप यूहन्ना 20 पर जाए। यूहन्ना 20 यीशु के पुनरुत्थान की कहानी है, और इस अध्याय में तीन पात्र हैं: मरियम, यूहन्ना, और थोमा।

और ये तीनों पात्र हमें संदेह की एक तस्वीर देते हैं। मरियम कब्र पर जाती है, लेकिन यद्यपि कब्र खाली है, फिर भी उसे कोई अपेक्षा नहीं है कि यीशु जी उठे हैं। वह कहती है, उन्हें कहाँ रखा है? उसे लगता है कि वह किसी माली से बात कर रही है। यूहन्ना कब्र की ओर दौड़ता है, लेकिन वह अंदर नहीं जाता। वह हिचकिचाता है, और जब तक पतरस कब्र में कूदकर नहीं जाता, तब तक यूहन्ना अंदर नहीं जाता। थोमा पहली सभा में नहीं था, और वह कहता है, जब मैं देखूँगा, जब मैं उसके शरीर को छुऊँगा, जब प्राकृतिक परिस्थितियाँ संभव होंगी, तब मैं विश्वास करूँगा। यूहन्ना 20 में आपको तीन व्यक्तियों की यह तस्वीर मिलती है, जिनमें से प्रत्येक किसी न किसी प्रकार के संदेह को दर्शाता है, एक ऐसा है जिसमें कोई अपेक्षा (आशा) नहीं है, एक ऐसा है

जिसमें हिचकिचाहट है, और एक थोमा है जिसे विश्वास करने के लिए प्राकृतिक परिस्थितियाँ संभव देखनी होती हैं।

क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कहना चाह रहा हूँ? यह सामग्री आपके श्रोताओं से जुड़ती है, क्योंकि आपके श्रोताओं में हर कोई कभी न कभी यह अपेक्षा (आशा) नहीं करता कि परमेश्वर कार्य कर सकता है। कभी-कभी वे इस बात पर हिचकिचाते हैं कि परमेश्वर उन्हें क्या करने को कह रहा है। कभी-कभी वे कहते हैं, सिर्फ तब जब प्राकृतिक परिस्थितियाँ (संभव) उसकी ओर ले जाएँ। और आप ऐसी सामग्री बना रहे हैं जो उन्हें सिखाए, उस ढांचे, उस उद्देश्य के आधार पर लेकिन यह भी समझते हुए कि यहाँ क्या हो रहा है। ऐसी सामग्री बनाने के लिए, आपको सबसे पहले उस खंड का अध्ययन स्वयं करना होगा, बिना किसी सहायता के। टीकाओं या अन्य उपदेशों से शुरुआत न करें। यदि परमेश्वर ने आपको चुना है कि आप उसका वचन बाँटें, तो आप अपनी व्यक्तिगत बाइबिल पढ़ाई से शुरू करें। इस खंड को ध्यान से पढ़ें। अच्छी तरह अध्ययन करें। परमेश्वर से अंतर्दृष्टि प्राप्त करें। जब आपको वह अंतर्दृष्टि मिल जाए, आपने उससे प्रश्न पूछ लिए हों, आपने एक ढाँचा बना लिया हो, तब आप अवश्य अन्य स्थानों पर जा सकते हैं जो उसमें कुछ जोड़ सकें टीकाएँ या अध्ययन जो उसमें कुछ और गहराई ला सकें। लेकिन मेरा मानना है कि जब आप परमेश्वर का वचन बाँटने जा रहे हों, तो यह बहुत ही खतरनाक हो सकता है

यदि आप शुरुआत ही किसी और की कही बात से करें, बजाय इसके कि पवित्र आत्मा आपको एक अंतर्दृष्टि दे।

और जब आप ऐसा करते हैं, तब उस सामग्री तक पहुँचने में आपको यह निर्धारित करना होता है कि वह आपके श्रोताओं के लिए कितनी प्रासंगिक (मिलता जुलता) है। यह उनके लिए कैसे मायने रखता है?

तो यूहन्ना 20 में, आप मरियम, यूहन्ना और थोमा को देख सकते हैं, और आप पाएँगे कि यह बहुत प्रासंगिक (मिलता जुलता) है। मरियम को कुछ भी अपेक्षित (आशा) नहीं था क्योंकि वह एक स्त्री थी, और स्त्रियों को तो न्यायालय में गवाही देने की भी अनुमति नहीं थी। यहाँ एक पहचान का मुद्दा था वह इतनी उपेक्षित (तिरस्कृत) थी, तो वह कैसे किसी बात की अपेक्षा कर सकती थी कि कुछ असाधारण हो सकता है? जबकि यीशु ने इसके बारे में एक वर्ष तक उसे सिखाया था, फिर भी उसे कोई अपेक्षा (आशा) नहीं थी। और आपके श्रोताओं में कई लोग ऐसे हैं जो यह महसूस करते हैं कि वे अयोग्य हैं और उन्हें यीशु से कुछ भी अपेक्षित नहीं है और यही वह प्रासंगिकता (मिलता जुलता) है।

यूहन्ना, वह हिचकिचाया।
मैं सोचता हूँ, क्या उसने यह हिचकिचाहट किसी निराशा के कारण किया? वह शायद अनजाने में निराश था, और यूहन्ना इंतज़ार करता है और उसे पतरस की आवश्यकता होती है कि वह भीतर आए। और

इसमें एक प्रासंगिकता (मिलता जुलता) है आपके श्रोताओं में कुछ लोग ऐसे होंगे जो परमेश्वर पर विश्वास करने में निराश होने से डरते हैं, और उन्हें अपने आसपास किसी की आवश्यकता होती है जो उनकी मदद करे कि वे इसमें और आगे बढ़ सकें।

थोमा, उसका पूरा जीवन एक प्रेरित होने पर आधारित था। लेकिन हम जानते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक सिखाती है कि प्रेरित बनने के लिए पुनरुत्थान पाए यीशु के साथ होना आवश्यक था। और थोमा कह रहा है, मैं आपके शब्दों के आधार पर नहीं चल सकता। मुझे स्वयं देखना है। लेकिन यह उसके लिए इतना महत्वपूर्ण है कि उसे प्राकृतिक परिस्थितियों की संभावना की आवश्यकता है।

और आपके श्रोताओं में ऐसे लोग होंगे जो कहते हैं, "जब मैं देखूँगा कि प्राकृतिक परिस्थितियाँ सचमुच बदल रही हैं, तभी मैं विश्वास करूँगा। तो आप देखते हैं कि यह श्रोताओं के लिए कितनी प्रासंगिक (मिलता जुलता) बात है, और फिर आप यह भी देखते हैं कि यीशु मरियम, यूहन्ना और थोमा को कैसे उत्तर देता है।

मरियम के लिए, जहाँ यह विश्वास का एक पहचान से जुड़ा हुआ मुद्दा था, यीशु बस प्रकट हो जाता है। आप समझ सकते हैं कि क्यों मरियम यीशु को गले लगाना चाहती थी, और आप अपने श्रोताओं से वह संबंध स्थापित करते हैं यीशु स्वयं को प्रकट करना चाहता है।

यूहन्ना के लिए, वह और पतरस दोनों अंदर गए, और बाइबल कहती है कि उन्होंने जाँच की, उन्होंने अध्ययन किया, उन्होंने कपड़ों को देखा कि वे कैसे रखे हुए थे। और लोग विश्वास में तब बढ़ते हैं जब वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं और उसे जाँचते परखते हैं।

और थोमा, वह उपस्थित हुआ, और जब वह आया और यीशु उसके सामने प्रकट हुआ, तो थोमा ने केवल एक ही बात कही, मेरा प्रभु, मेरा परमेश्वर, और सभी बाइबल विद्वान इस पर सहमत हैं कि उसने वास्तव में यीशु को छुआ ही नहीं था। उसे आवश्यकता नहीं रही, उसने अपनी शर्तें छोड़ दीं।

तो यूहन्ना 20 में, आपके पास यह एक चित्रण के रूप में है।

यदि आप परमेश्वर का वचन बाँटने जा रहे हैं, तो मुझे एक उद्देश्य की आवश्यकता है। मैं क्या करने का प्रयास कर रहा हूँ?

यूहन्ना 20 के लिए, आप उन्हें विश्वास के एक उच्च स्तर की ओर प्रेरित करना चाहते हैं। आप एक ढाँचा बनाना चाहते हैं, और मेरे पास तीन पात्र हैं जो संदेह के तीन अलग-अलग स्थानों की पहचान कराते हैं। आप चाहते हैं कि वह बात उनके लिए प्रासंगिक (मिलता जुलता) हो और उनसे जुड़ी हो। और जब आप परमेश्वर का वचन बाँटते हुए कहानियाँ सुनाते हैं, शायद दृष्टांतों का प्रयोग करें, सुनिश्चित करें कि आप ऐसी कहानियाँ सुनाएँ जो उनकी अपनी कहानियाँ हों, ऐसी कहानियाँ जिनमें आपके श्रोता स्वयं को देख सकें।

कभी-कभी मैं शिक्षकों को सिखाते हुए सुनता हूँ, और वे मदर टेरेसा जैसी कोई कहानी सुना देते हैं। लेकिन हममें से कोई भी मदर टेरेसा की कहानी में खुद को नहीं देख सकता। हमें ऐसी कहानियाँ सुनानी चाहिए जिनमें हमारे श्रोता खुद को देख सकें, ताकि वे परमेश्वर के वचन से जुड़ सकें। इसलिए आप उद्देश्य बनाते हैं, यही वह बात है जो सबसे अधिक प्रभाव डालेगी। फिर आप ढाँचा बनाते हैं, यूहन्ना 20 में ये तीन पात्र।

फिर आप सामग्री का अध्ययन करते हैं, और आप ऐसी समझ और प्रासंगिकता (मिलता जुलता) पैदा करते हैं जो श्रोताओं की स्थिति से जुड़ी हो। इसके बाद आपको जिस बात पर वास्तव में मेहनत करनी है वह है **प्रवाह (धारा)**।

आपके पास बीस मिनट हो सकते हैं, या एक घंटा हो सकता है, पर सवाल यह है: प्रवाह (धारा) क्या है? अक्सर मैं देखता हूँ, खासकर युवा शिक्षक, कि उनके पास एक शिक्षा नहीं होती, बल्कि तीन छोटे-छोटे सन्देश होते हैं। एक सत्य क्या है उस एक उद्देश्य के साथ जिसे आप पाना चाहते हैं कि वे उसे पकड़ लें? और कभी-कभी हम बस कई सन्देश बना लेते हैं और उन्हें एक साथ जोड़ देते हैं। ऐसा मत करो। परमेश्वर को तुम्हें एक प्रकाशन देने दो। इसके साथ समय बिताओ। आप केवल सत्य को व्यक्त नहीं कर रहे हो। यह आप में जीवित होता है। यह आप में स्थिर होता है। और आप इसे अपने दिल के सबसे गहरे हिस्से से साझा करते हो।

फिर, ज़ाहिर है, जो बहुत महत्वपूर्ण है, आपने उद्देश्य पहचान लिया है, आपने ढांचा बना लिया है, आपने सामग्री का अध्ययन किया और उसे प्रासंगिक (मिलता जुलता) बनाया, तुम्हें प्रवाह (धारा) पता है जो चल रहा है। तुम्हें उसे सुनाना है। तुम्हें उनके सामने खड़ा होना है या उनके साथ बैठना है, और तुम्हें उसे सुनाना है। और यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि जब आप इसे सुनाते हो, तो आप श्रोताओं के प्रति जागरूक रहो और उन्हें एक केंद्र में बनाए रखो। क्योंकि पहले एक शत्रु है जो उन्हें भटका देगा। लोग कभी-कभी सुनने में अच्छे नहीं होते। और जब आप सुनाते हो, अगर तुम्हें लगे कि, यह वैसा नहीं जा रहा जैसा मैंने सोचा था, तो आप एक प्रश्न के द्वारा उन्हें फिर से केंद्रित कर सकते हो। आप समीक्षा कर सकते हो। आप रुक सकते हो और बस उनसे कह सकते हो, आप इसे कैसे लागू करोगे? लेकिन सुनाना कोई प्रदर्शन नहीं है। यह एक पात्र होने के बारे में है।

लेकिन यह भी है कि आप यह पहचानो कि कब आप अपने श्रोताओं को खो सकते हो और तुम्हें उन्हें फिर से एकत्र करने और जोड़ने की आवश्यकता है। इसीलिए तैयारी वास्तव में मायने रखती है। तैयारी पवित्र आत्मा द्वारा अगुवाई पाने के विपरीत में नहीं है। तैयारी का अर्थ है सब कुछ पवित्र आत्मा को समर्पित करना, ताकि आप उस क्षण में सबसे अधिक प्रवाही रह सको क्योंकि आप अच्छी तरह से तैयार हो। अब, यदि आप इस प्रकार से शिक्षा को तैयार करते हो, मुझे उद्देश्य पता है, मुझे ढाँचा पता है, मैंने सामग्री तैयार कर ली है, उसका एक प्रवाह है, और प्रस्तुति का पक्ष भी, मैं उसके लिए तैयार

हूँ, तो अब कुछ बातें हैं जिन्हें सुझाव के रूप में ध्यान में रखना चाहिए। जो वास्तव में महत्वपूर्ण है वह है: स्पष्टता। क्या यह स्पष्ट है? अपनी भाषा और अपने शब्दों पर ध्यान दो।
मैं तुम्हें यह सुझाव दूँगा, ऐसे वाक्यांशों को दोहराने से बचो जो उन्होंने सौ बार सौ अन्य शिक्षकों से सुन चुके हों। ऐसी भाषा खोजो जो अनोखी हो, ताज़ा हो, नया हो, जो उनकी कल्पना और उनकी रुचि को बनाए रखे। यह स्पष्ट होनी चाहिए, बहुत, बहुत स्पष्ट।

अगर मैंने उसी दिन बाद में किसी ऐसे व्यक्ति से पूछा जिसने तुम्हारी शिक्षा सुनी, तो वह यह कह सके, हाँ, यही बात थी। उसे अपने नोट्स में जाकर हर विवरण नहीं बताना होगा, लेकिन उसके पास एक समझ होगी क्योंकि आपने अपनी भाषा में स्पष्टता रखी है।

दूसरी बात, सुनिश्चित करो कि यह प्रासंगिक (मिलता जुलता) हो। यह प्रामाणिक होनी चाहिए। तुम्हें वास्तविक मुद्दों को उठाना होगा। सुसमाचारों में एक वचनांश है जो बताता है कि यीशु ने चेलों को बाहर भेजा, और जब वह उन्हें गाँवों में भेजता है, तो वह कहता है, जब वे तुम्हें स्वीकार नहीं करें, तो यह है जो तुम्हें करना है। अब, वह उन्हें सिखा रहा है, लेकिन वह उन्हें सेवा का एक बहुत ही प्रामाणिक चित्र दे रहा है। जब आप असफल हो जाओ, तो यह है जो तुम्हें करना है। यह बहुत प्रासंगिक है जहाँ वे हैं, और कभी-कभी जब हम परमेश्वर का वचन बाँटते हैं, तो हम उसे उतना प्रासंगिक नहीं बनाते जितना उसे होना चाहिए। ऐसे प्रश्न उठाओ जो पहले से ही उनके मन में हैं,

जो उनके लिए बहुत प्रासंगिक हैं, और फिर उन प्रश्नों के उत्तर दो। उनकी स्थिति की वास्तविकता से बात करो।

यूहन्ना 20 का वचनांश संदेह की बात करने का एक उदाहरण है, जो हर किसी के पास होता है:
एक हिचकिचाहट, एक अपेक्षा की कमी, प्राकृतिक परिस्थितियों की आवश्यकता, यह हर किसी के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। और जब आप इस प्रकार से बोलते हो, तो वे आपके वचन के बाँटने से आकर्षित हो जाएँगे। और अंत में, और सच कहें तो, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप वचन को बाँट रहे होते हैं, तो आप सिर्फ एक स्कूल के शिक्षक या किसी पॉडकास्ट पर बोलने वाले जैसे नहीं होते।

एक सामर्थ है, एक अभिषेक है जो आपके माध्यम से बहना चाहिए, जिसका अर्थ है कि वास्तव में वचन को बाँटने के लिए, आपने उसके लिए परिश्रमपूर्वक तैयारी की हो। आपने प्रार्थनापूर्वक तैयारी की हो। लेकिन एक ऐसा स्थान भी है जहाँ आप परमेश्वर और परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर हो कि वे आपके माध्यम से कार्य करें, और वह स्थान नम्रता और कृतज्ञता से आता है। अपने आप को संसार का सबसे बड़ा शिक्षक मत समझिये। अपने आप को पवित्र आत्मा का एक पात्र समझिये। हर बार जब मैं शिक्षा देने के लिए खड़ा होता हूँ, तो मेरी एक सरल प्रार्थना होती है। मैं कहता हूँ, परमेश्वर, धन्यवाद इस अवसर के लिए कि मैं तेरा वचन बाँट सकूँ। मेरे माध्यम से बह और मुझे याद दिला कि यह सब तेरे बारे में है, तेरी भलाई और तेरे

अनुग्रह के बारे में, और मेरी योग्यता या क्षमता के बारे में नहीं। जब आप स्पष्ट हो, जब आप प्रासंगिक हो, और जब आप समझते हो कि परमेश्वर की सामर्थ आपके माध्यम से प्रवाहित हो रही है, तो परमेश्वर आपको सही स्थान देगा।

जैसा मैंने कहा, हर मसीही सेवकाई में अगुवाई करने वाला व्यक्ति किसी न किसी रूप में परमेश्वर का वचन बाँटेगा।

कभी-कभी किसी दल की एक संचालनात्मक बैठक को शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका यह होता है कि आप 10 मिनट का एक आत्मिक मनन लो और परमेश्वर का वचन उन्हें बाँटो। यह संचालनात्मक बैठक के लिए आत्मिक वातावरण तैयार करता है। हर कोई ऐसा करेगा, और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें शिक्षक होने का वरदान मिला है लेकिन हर किसी को यह अवसर और यह ज़िम्मेदारी मिली है कि वे लोगों तक परमेश्वर का वचन पहुँचाएँ। कभी-कभी यह किसी बातचीत में घटित होता है। अपने आप को अच्छी तरह से तैयार करे। परमेश्वर को अपने माध्यम से उसका वचन बाँटने के लिए इस्तेमाल करने दे। और देखे कैसे, परमेश्वर के वचन को बाँटने के द्वारा, परमेश्वर रूपांतरण और प्रभाव लेकर आता है, उन लोगों के जीवन में जिनसे आप बात कर रहे हो, क्योंकि वह अपने वचन के द्वारा आपके माध्यम से बोलता है।